ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

COVID-19 से बचाव के लिये दिशा-निर्देश
2 गज की दूरी
हम सबके लिए ज़रूरी
बदलकर अपना व्यवहार, करें कोरोना पर वार

वर्ष 43, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 जुलाई, 2020 से रविवार 12 जुलाई, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रावणी पर्व/वेद प्रचार सप्ताह : क्या करें और क्या न करें

वर्तमान परिस्थितियों से सारा आर्य समाज भलिभांति अवगत है। कोरोना वायरस के कारण मार्च महिने से हम अपने आर्य समाजों में कोई भी किसी भी प्रकार का वृहद आयोजन नहीं कर रहे हैं। इसके लिए हमने भारत सरकार के निर्देश तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञानुसार दिल्ली की आर्य समाजों के लिए समय समय पर सूचनाएं भी दी हैं कि इस जानलेवा कोरोना के चलते हमें कोई भी ऐसा कार्य अपनी आर्य समाजों में नहीं करना है जिससे बाद में कोई समस्या उत्पन्न हो। हमारे सभी आर्य समाजों ने सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रेसित गाइडलाइन का पूरा पालन किया है और अभी भी सभी आर्य समाज अक्षरसः पालन कर रहे हैं। इसके लिए आर्य समाजों के समस्त अधिकारियों और कार्यकर्ताओं का बहुत-बहुत आभार।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान

पर्व प्रेरणा का प्रकाश

बंधुओ, वैदिक पर्व पद्धति के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी-न-किसी कारण से मानव मन में उदासी, निराशा और चिंता आदि का प्रवेश स्वाभाविक

रक्षा बन्धन

है। इसीलिए पूर्वजों के अनुसार समय-समय पर हमारे यहां पर्व मनाने की परंपरा अति प्राचीन है। क्योंकि पर्व में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को नई शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करते हैं। श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहराई से चिंतन-मनन कर अपनाने से ही मनुष्य जीवन ऊंचाई प्राप्त करता है।

श्रावणी पर्व पर क्या करें और क्या न करें

हर वर्ष लगभग प्रत्येक आर्यसमाज श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव एवं अनेक अन्य प्रेरक आयोजन करते हैं। इन समस्त कार्यक्रमों से समाज में एक नई ऊर्जा का संचार सम्भव होता है। इस वर्ष हमें आर्य समाजों में या बाहर पार्कों आदि में बड़े समारोह आयोजित नहीं करने हैं। लेकिन हम अपने घर-परिवारों में केवल पारिवारिक जन मुंह पर मास्क लगाकर और उचित दूरी रखते हुए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए, हमारे पुराहित वर्ग को भी अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए इन दिनों में विशेष स्वाध्याय करना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाजी को अपने महापुरूषों का प्रेरक जीवन और आर्य समाज का इतिहास भी पढ़ना चाहिए। स्वाध्याय से आत्मबल बढ़ता है, मनोबल में वृद्धि होती है और

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

जीवन का समुचित विकास स्वाध्याय से ही संभव है।

श्रावणी पर्व पर नियमित स्वाध्याय का करें - संकल्प

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित-आचार्यो को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्याय शील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शुद्रों को भी अपने उत्थान के लिए स्वाध्याय करना ही चाहिए। अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखाई देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर कोई उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर, बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरंतर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है। समुद्र के किनारे पर जो रेत का अंबार होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। - शेष पृष्ठ 7 पर

बलिदान दिवस
1 जुलाई पर विशेष

हैदराबाद सत्याग्रह के शहीद ठाकुर मलखान सिंह

....ज्यों ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने हैदराबाद में सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने का जयघोष किया त्यों ही देश-धर्म के जिन दीवानों के खून में तरंगे उठीं, उनमें से ठाकुर मलखान सिंह जी भी एक थे। यह बालक भी अब हैदराबाद की जेल को अपना निवास बनाने के लिए तथा वहां जाकर धर्म रक्षा की उमंग ले कर डोलने लगा। तथ्य यह भी है कि संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) का जिला सहारनपुर एक ऐसा जिला रहा है कि जिसने हैदराबाद के इस सत्याग्रह आन्दोलन के लिए देश में सर्वाधिक सत्याग्रहियों के रूप मेन अपना योगदान देने का गौरव प्राप्त किया। इस जिले को यह गौरव दिलाने का कार्य करने वाले ठाकुर मलखान सिंह जी ही थे, जिनके अथक परिश्रम ने यह कार्य कार दिखाया। जो प्रथम जत्था सहारनपुर से हैदराबाद के लिए रवाना हुआ, उस जत्थे का मलखान सिंह जी भी एक अंग थे।....

विश्व इतिहास में आर्य समाज एकमात्र एसी संस्था है, जिस ने अल्पकाल में ही इतने बलिदानी दिए कि विश्व की कोई अन्य संस्था नहीं दे सकी। आज तो यह स्थिति बन गई है कि आर्य समाज के बलिदानियों की गिनती कर पाना भी संभव नहीं है। आर्य समाज ने न केवल देश की स्वाधीनता के लिए हि अपने बलिदानियों को पंक्तिबद्ध किया अपितु धर्म व जाति की रक्षा के लिए भी अनगिनत बलिदान दिए। इन सबके अतिरिक्त हैदराबाद सत्याग्रह में बलिदान, सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह में बलिदान तथा अन्य अनेक सामाजिक कार्यो तथा अनेक अवसरों पर आर्य समाजियों ने जो बलिदान दिए, उन सबका अपना-अपना विशेष महत्व है। जनता पर सरकार के माध्यम से हो रहे अत्याचारों से नागरिकों की रक्षा करते हुए दिए गए बलिदान भी इन सबका भाग हैं। इस प्रकार आर्य समाजियों के बलिदानियों की लम्बी सूचि को जब देखते हैं तो इस सूचि में हमें सितारे की भान्ति चमकता हुआ एक नाम दिखाई देता है, यह नाम है हमारी इस अमर गाथा के नायक ठाकुर मलखान सिंह जी।

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में एक नगर है रुड़की। इस नगर के निकट ही एक ग्राम है रामपुर, जिसमें ठाकुरों की एक बस्ती है। इसी बस्ती में ठाकुर दलबीर सिंह जी अपनी पत्नी नवल देवी के साथ निवास करते थे। इन दोनों के तीन पुत्र थे। इन पुत्रों के नाम थे क्रमशः ठाकुर हंसराज, ठाकुर मलखान सिंह तथा ठाकुर स्वरूप सिंह। इनमें से मंझले भाई ठाकुर मलखान सिंह जी ही हमारी इस कथा के मुख्य नायक हैं। इन तीनों बच्चों की माता नवलदेवी जब मलखान सिंह जी कि पन्द्रह वर्ष की ही आयु थी। बच्चों के पिता के हाथों सौंप कर इस संसार से सदा के लिए विदा हो गईं।

माता नवल देवी की गोदी में किलोलें भरने वाला यह बालक मलखान सिंह आरम्भ से ही अपने पूर्वजों के उष्ण रक्त को अपनी धमनियों में संजोये हुए था। हैदराबाद आन्दोलन से पूर्व ही यह बालक कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भागा लेते हुए अंग्रेजों की कारागार में जाकर स्वाधीनता की देवी का सच्चा भक्त बन चुका था। चाहे ऋषि पथ आधारित होने के कारण मलखान सिंह जी का परिवार साधारण सी ही स्थिति का ही था किन्तु वीर सपूतों, देश के दीवानों के सामने यह पारिवारिक स्थिति कभी बाधा नहीं बना करती, मलखान सिंह जी ने अपना बलिदान देकर इस बात को साकार कर दिखाया।

ज्यों ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने हैदराबाद में सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने का जयघोष किया त्यों ही

- शेष पृष्ठ 8 पर

वेद-स्वाध्याय

हम तेरे हो जाएं

यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशोऽनागास्त्वमदिते सर्वताता।
यं भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम। ऋ० १/१४/१५
ऋषि : **कुत्स आंगिरसः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **अदिते** = हे अखण्डस्वरूप अग्ने! **त्वम्** = तुम **यस्मै** = जिस पुरुष के लिए **सर्वताता** = उसके सब कर्म-विस्तार में, सब कर्मों में **अनागास्त्वम्** = निरपराधता, निर्दोषता **ददाशः** = प्रदान करते हो और **यम्** = जिस पुरुष को तुम **सुद्रविणः** = हे सुन्दर बल व धनवाले! **भद्रेण शवसा** = कल्याणकारक बल से तथा **प्रजावता राधसा** = उत्पादक धन से **चोदयासि** = प्रेरित करते हो, अनुप्राणित करते हो, वैसे होते हुए हम **ते** = तेरे **स्याम** = हो जाएं।

विनय - हे प्रभो! हम तेरे ही हो जाएं। हम चाहते हैं कि हम अपने न रहें, तेरे हो जाएं। तेरे होने से हम तर जाएंगे, परन्तु तेरे हो जाने वाले सौभाग्यशाली पुरुष होते हैं। जिनके लिए तू 'निरपराधत्व' का वर प्रदान कर देता है। ऐसे पुरुष नाना प्रकार के कार्य किया करते हैं, किन्तु उनके सब कर्म-विस्तार में तुम्हारी कृपा से सदा निर्दोषता रहती है। हे अखण्ड! हे पूर्ण अग्ने! तेरे सहारे किए गए कर्मों में अपूर्णता, दोष, त्रुटि कैसे रह सकती है? तू अदिति है, तुझमें दिति, खण्डता व बन्धन नहीं है, अतः तेरे हो चुके, तेरे अनन्य उपासक के कर्म भी खण्डित व दोषयुक्त क्यों होंगे? तेरे ऐसे भक्तों के भयंकर-से भयंकर दीखनेवाले कर्म भी निर्दोष व उचित ही होते हैं। धन्य-धन्य हैं वे तेरी कृपा पाने वाली विशुद्ध आत्माएं, जिनके सब कर्म प्रवाहों में, हे सुद्रविण! हे शुद्ध बल (शवस!) और धन (राधस्) असाधारण प्रकार का हो जाता है। उनका बल सदा 'भद्र' होता है और उसका धन 'प्रजावान्' होता है। उनमें तू जिस प्रकार के बल की प्रेरणा करता है व ह बल भद्र होता है, कल्याण के लिए होता है। वह दुर्बलों के सताने व आत्महनन में लगने वाला अभद्र बल नहीं होता, किन्तु आत्मोन्नति कराने में, दुःखितों-पीड़ितों की रक्षा में निरन्तर लगने वाला बल होता है। एवं, उनका धन-ऐश्वर्य 'प्रजावान्' होता है, प्रजनन करने वाला - उत्पादक होता है। अनुत्पादक धन नहीं होता। उनका ऐश्वर्य कुछ भी सृजन न करने वाला नहीं हीता, अपितु सदैव उत्तरोत्तर उत्तम परिणाम लानेवाला होता है। ओह! ऐसे धन के साथ, ऐसे बल के साथ हम तेरे हो जाएं हे अदिते! निष्पाप होकर हम तेरे हो जाएं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

चीन से सीमा विवाद के बीच गलवान घाटी में सैनिकों का आह्वान

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की लेह यात्रा के मायने

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लेह दौरे का महत्व इसलिए भी ज्यादा है कि उनकी यात्रा से पहले रक्षा मंत्रालय द्वारा जरूरी अस्त्र-शस्त्र की खरीद के लिए एक बड़े पैकेज को स्वीकृति मिली थी। इससे पहले रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह का वहां जाना तय था लेकिन अचानक प्रधानमंत्री चले गए। उनके अचानक लेह जाने से सीमा पर तैनात हमारे सैनिकों और सुरक्षाबलों का बहुत मनोबल बढ़ा। प्रधानमंत्री की यह नीति रही है कि कितनी भी मुश्किल जगह और हालात क्यों न हों वे समय मिलते ही सीधा उस जगह पहुंच जाते हैं। 11 हजार फीट की ऊंचाई पर जाने के लिए उन्होंने कोई पूर्व तैयारी नहीं की थी, वहां उन्होंने सैनिकों और अर्धसैनिक बलों से मुलाकात की और अस्पताल में भर्ती घायल सैनिकों का हालचाल भी पूछा। लेह में प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि विस्तारवाद की नीतियां अब नहीं चलेंगी, अब विकासवाद चलेगा। एक तरीके से चीन और पाकिस्तान जैसे हमारे पड़ोसी देशों, जो हमेशा अपनी सीमाओं का विस्तार करने की कोशिश में लगे रहते हैं, उनका नाम लिए बिना प्रधानमंत्री ने उन्हें एक सीधा संदेश दिया है। प्रधानमंत्री ने खासतौर से चीन के लिए यह संदेश दिया कि वह अपने यहां मानवाधिकार की स्थिति सुधारे और अपनी जनता को ज्यादा सहूलियत दें। क्योंकि चीन से लगातार खबरें आती रहती हैं कि उसने अपने करीब 10 लाख लोगों को डिटेंशन सेंटर में बंद कर रखा है, इससे पूरे विश्व को यह संदेश जाएगा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है जो हमेशा अपने पड़ोसी और सभी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाना और उनके साथ मिलजुल कर रहना चाहता है। लेकिन यदि विस्तार वादी नीतियों के तहत कोई देश उनके खिलाफ कदम उठाने की कोशिश करता है तो भारत उसका जवाब देना भी जानता है। यह एक बहुत बड़ा संदेश है हमारी जनता के लिए भी सैनिकों के लिए भी और विश्व के लिए भी। चीन के साथ हमारी राजनीतिक या सैन्य अधिकारी स्तर पर जो बैठकें होती हैं उन पर रोक नहीं लगी है, वह प्रक्रिया जारी रहेगी। लेकिन यह भी दिखाना है कि भारत को चीन कमजोर न समझे, जैसा कि अब तक वह सोचता आया है कि भारत एक कमजोर देश है और आसपास के कमजोर देशों की तरह उसे भी दबाया जा सकता है। चीनी मीडिया बार-बार 1962 का हवाला देकर इसे ही जताने की कोशिश कर रहा है। चीन के अखबारों को देखकर ऐसा लगता था जैसे चीन के लोग 1962 के बाद आगे नहीं बढ़े हैं, विश्व के जो मौजूदा हालात हैं उनका उन्होंने कभी अध्ययन नहीं किया है, इसलिए उन्हें स्थितियों से अवगत कराना आवश्यक था।

प्रधानमंत्री के लेह जाने से यह संदेश गया है कि भारत कमजोर नहीं बल्कि एक मजबूत देश है और वह विकास की नीति पर आगे बढ़ रहा है, आत्मनिर्भर बन रहा है, देश के विकास के लिए जो भी कदम उठाना होगा, वह उठाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने अप्रत्यक्ष तौर पर यह भी कहा है कि भारत में चीन समेत दूसरे देशों से जो भी वस्तुएं आती थीं, उनके संबंध में भी यदि भारत कोई निर्णय लेता है तो येह उसके विकास के लिए होगा। बातों-बातों में प्रधानमंत्री ने इसे भी न्यायोचित ठहरा दिया है। इस यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण बात है कि चीन को शीर्ष स्तर पर अनेक संकेत दिए गए हैं, चीन के लिए भी एक मौका है वह इस बात को समझे कि भारत शीर्ष स्तर पर वर्तमान मामले का मूल्यांकन कर रहा है। इसलिए भारत के साथ उसकी जो भी तनातनी चल रही है वह उसे खत्म करे। भारत ने संकेतों में चीन को इंगित करने का प्रयास किया है कि भारत के साथ जो उसकी जारी वार्ता इस स्तर पर पहुंच गई है और अब चीन को भी शीर्ष स्तर पर निर्णय लेना होगा। भारत के साथ जो भी वादा करता है उसे निभाना होगा और तनातनी को रोकना होगा। भारत ने कह दिया है कि वह अच्छी तरह बात करता है इसका मतलब यह नहीं कि वह केवल बात ही करना जानता है बल्कि वह

.....बातों बातों में प्रधानमंत्री ने इसे भी न्यायोचित ठहरा दिया है इस यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण बात है कि चीन को शीर्ष स्तर पर अनेक संकेत दिए गए हैं चीन के लिए भी एक मौका है वह इस बात को समझे कि भारत शीर्ष स्तर पर वर्तमान मामले का मूल्यांकन कर रहा है इसलिए भारत के साथ उसकी जो भी तनातनी चल रही है उसे खत्म करे। भारत ने संकेतों में चीन को इंगित करने का प्रयास किया है कि भारत के साथ जो उसकी जारी वार्ता इस स्तर पर पहुंच गई है और अब चीन को भी शीर्ष स्तर पर निर्णय लेना होगा। भारत के साथ जो भी वादा करता है उसे निभाना होगा और तनातनी को रोकना होगा। भारत ने कह दिया है कि अच्छी तरह बात करने का मतलब यह नहीं है कि वह जवाब देना नहीं जानता। आज के विश्व के एक मजबूत देश एक-एक कर भारत के साथ जुड़ रहे हैं। भारत ने यह भी जता दिया है कि उसने शांति का जो रास्ता अपनाया है उस प्रतिबद्धता के साथ वर्तमान तनाव के लिए चीन को जवाब देना होगा अभी एक त्वरित प्रक्रिया चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता सी आई है लेकिन इस मामले को चीन को शीर्ष स्तर पर देखना चाहिए और अपने विचार रखने चाहिए भले ही कुछ समय बाद ऐसा करें।.....

जैसे को तैसा जवाब देना भी जानता है। आज अनेक देश एक-एक कर भारत के साथ जुड़ रहे हैं। भारत ने यह भी जता दिया है कि उसने शांति का जो रास्ता अपनाया है उस प्रतिबद्धता के साथ वर्तमान तनाव के लिए चीन को जवाब देना होगा। अभी एक त्वरित प्रक्रिया में चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता से आई है, लेकिन इस मामले को चीन को शीर्ष स्तर पर देखना चाहिए और अपने विचार रखने चाहिए, भले ही कुछ समय बाद ऐसा करे।

जब चीन की तरफ से संदेश आएगा तभी हमें पता चलेगा कि उसका क्या रवैया है और आगे हमें क्या करना है। यह सच है कि चीन अपने सभी पड़ोसी देशों में जहां-जहां उसके मतभेद हैं उनके साथ सख्ती से निपटना चाहता है। पाकिस्तान और नेपाल को छोड़ दिया जाए तो उसके संबंध सभी पड़ोसियों के साथ खराब ही हैं। ऐसे में उसे शीर्ष स्तर पर यह संदेश दिया गया है कि सख्ती से निबटने वाली चीन की नीति भारत के साथ नहीं चलने वाली है। अब यह देखना होगा कि चीन का क्या हस्र होता है।

- सम्पादक

मजहब ए मोहब्बत से भटक गया हिन्दू समुदाय

जब परम ध्यानी और तपस्वी शिव को भांग पीने वाला कहा जाने लगे, जब ज्ञान, नीति और धर्म के ज्ञाता श्रीकृष्ण जी को रसिक, ठाकुर कहा जाने लगे और जब धर्म के गुरुओं का अपने मंचों से म्लेच्छों का गुणगान करने पर जनता तालियाँ बजती हों तो समझ लीजिये कि योग्य गुरु के अभाव में हिन्दू समुदाय भटक गया है। हमने मोरारि बापू की पुस्तक मजहब-ए-मोहब्बत पढ़ी। अपनी पुस्तक मजहब-ए-मोहब्बत के 167 वें पेज पर मोरारी बापू कह रहे हैं कि राम-राम पढ़ते मेरी जुबान तो पवित्र हो ही चुकी है, आज कुरआन पढ़ लूँ, और पवित्र हो जाएगी। क्या फर्क पड़ता है जुबान पर वेद के मन्त्र हों या पवित्र कुरआन की आयतें। ऐसी न जाने कितनी उट-पटांग बातें उक्त पुस्तक में भरी पड़ी हैं। केवल एक बापू को ही दोष देना उचित नहीं है, बल्कि रामपाल हो या देवी चित्रलेखा कोई भी कहीं भी कथा के नाम पर धर्म के नाम पर अपनी गद्दी सजा ले रहा है।

धर्म के क्षेत्र के एक कहावत है कि स्वयं का अध्ययन और योग्य गुरु का होना बेहद जरुरी है, यदि इनमें से एक भी चीज कम है तो इन्सान को भटकने से कोई नही रोक सकता है। एक समय एक कालखंड ऐसा था जब यहाँ न योग्य गुरु बचे थे और न स्वयं का अध्ययन। तब इस वैदिक धरा पर विदेशियों का शासन हो गया था। इसी से त्रस्त होकर दुखी होकर स्वामी दयानंद जी खड़े हुए और लोगों को अज्ञानता के अंधकार से बाहर ज्ञान के प्रकाश का मार्ग दिखलाया। लेकिन आज जैसे ही साधन और विज्ञान आगे बढ़ा दोबारा उन लोगों द्वारा भीड़ जोड़कर वही अज्ञानता परोसी जा रही है। हालाँकि थोड़ी सच्चाई यह भी है कि आज के व्यस्त जीवन में समय के अभाव ने लोगों को हर विषय में शॉर्टकट करने के लिए मजबूर कर दिया है। मन है, श्रद्धा है, लेकिन समय की कमी है जिसके चलते लोग इन विषयों पर न कहीं चर्चा करते हैं और न ही किसी सुयोग्य विद्वानों का सत्संग करते हैं ऐसे में ज्ञान अन्दर आए भी तो कैसे?

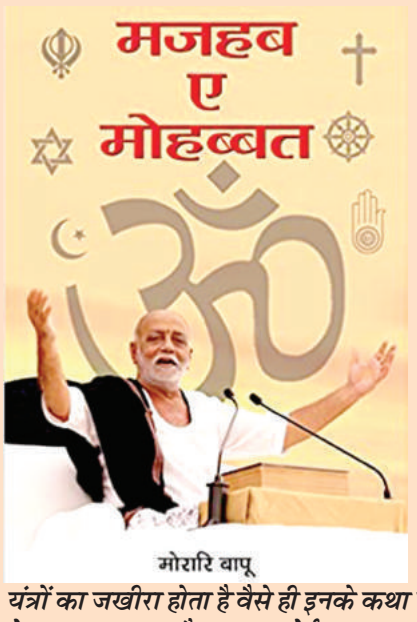

मोरारि बापू

.....अपनी पुस्तक मजहब-ए-मोहब्बत के 167 वें पेज पर मोरारी बापू कह रहे है कि राम-राम पढ़ते मेरी जुबान तो पवित्र हो ही चुकी है, आज कुरआन पढ़ लूँ, और पवित्र हो जाएगी। क्या फर्क पड़ता है जुबान पर वेद के मन्त्र हों या पवित्र कुरआन की आयतें। ऐसी ना जाने कितनी उट-पटांग बातें उक्त पुस्तक में भरी पड़ी है। केवल एक बापू को ही दोष देना उचित नहीं है, बल्कि रामपाल हो या देवी चित्रलेखा कोई भी कहीं भी कथा के नाम पर धर्म के नाम पर अपनी गद्दी सजा ले रहा है।.....

....आज के कथावाचक न संत हैं और न ही साधू, बस मृदुभाषी हैं, और मन से धन पिपासु हैं। जैसे फिल्मों में गाने के लिए लटके-झटके होते हैं, वाद्य यंत्रों का जखीरा होता है वैसे ही इनके कथा पंडालों में भी लटके-झटके को खुलेआम देखा जा सकता है। क्या कोई बता सकता है कि शुकदेव जी, वैशम्पायन जी, वशिष्ठ जी या सनत कुमारों द्वारा किसी कथा में भजन भी गाये थे? कोई नृत्य गान भी हुआ था? कोई संगीत मंडली भी होती थी? भगवान के धर्मोपदेश, उपदेश, उनके लीलाओं की गूढ़ समीक्षा, यहां तक कि उनके आदर्श चरित्र की चर्चा तो दूर की बात है ये तो शिष्यों में भक्ति के भाव को भी उत्पन्न नहीं कर पाते। महिलाएँ कैमरे के सामने खूब नृत्य करती हैं और कैमरा हटा बस सब भक्ति उतर गया।.....

कहीं कीर्तन मण्डली में बैठ गये, फोन में या टीवी में दो भजन सुन लिए, कहीं कथा सुन ली या मंदिर में साप्ताहिक प्रसाद चढ़ा दिया तो सोच लिया कि हमने धर्म कर लिया और हम धार्मिक हो गये। बस इसी साप्ताहिक, मासिक, छमाही या वार्षिक धार्मिकता का लाभ कथावाचक उठा रहे हैं। आजकल कथावाचकों द्वारा अज्ञानी शिष्यों के बीच सनातन धर्म को प्रदूषित किया जा रहा है। क्योंकि इन्हें अब राष्ट्रीय संत की उपाधि से संतुष्टि नहीं मिलती जब तक इन्हें अंतरराष्ट्रीय संत नहीं कहा जाए। इसी अंतर्राष्ट्रीय पद के लालच में ये लोग सनातन मंचों से जीसस की करुणा का बखान कर रहे हैं, इमाम हुसैन के किस्से सुना रहे हैं। मोहम्मद साहब को दया का सागर और योगिराज श्रीकृष्ण जी पर आरोप लगाने के साथ उनके बच्चों को शराबी उपद्रवी बता रहे हैं।

इनकी मार्केटिंग इतनी जबरदस्त है कि मल्टीनेशनल कम्पनियां भी चक्कर खा जाये। विदेशों में जाते हैं वहां बड़े-बड़े आसन सजाते हैं कि सामान्य जनमानस देखते ही ढेर हो जाता है। इनके ललाट पर फैशनेबल तिलक, डिजाइनदार वस्त्र और हाथों में अंगुठी, सोने का कड़ा, गले में ढाई तीन सौ ग्राम की चैन, लोग देखकर प्रभावित हो जाते हैं और समझते हैं कि ये तो उच्च कोटि के बड़े संत, महासंत हैं।

इसी मार्केटिंग की देन है मोरारि बापू। जब रामकथा नहीं होती, तो बापू वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर चले जाते हैं। जहाँ मुर्दो का अंतिम संस्कार किया जाता है। बापू वहां बैठकर अपने एक शिष्य का मंगल विवाह रचाते हैं, पता था आलोचना होगी लेकिन ये भी पता था कि नाम होगा। इसी तरह बापू मुंबई के वैश्याओं को कथा में आमंत्रित करने उनके घरों में गये, लोगों को बताया कि मानस में वैश्या का स्थान पर कथा सुनाऊंगा। कभी मानस में हिजड़े को पैकेज बनाकर कथा वाचन किया। जाहिर सी बात है कि आलोचना हुई, लेकिन लोकप्रियता भी मिली। चूँकि फिल्म का विज्ञापन करना हो तो हिंदू धर्म को अपमानित कर दो फिल्में हिट हो जाती हैं ठीक वैसे ही इनके साथ-साथ औरों ने इसे औजार बना लिया।

हम बापू के वेश्याओं के बीच कथा करने की आलोचना नहीं कर रहे हैं। अच्छा होता कि बापू मासिक, त्रिमासिक यह कथावाचन करते, उनके बच्चों को स्कूलों में भेजते। अपने ट्रस्ट के माध्यम से उनके लिए कल्याणकारी योजनाओं का आरम्भ करते, जिससे उनका इस नरक भरी जिन्दगी से हमेशा पीछा छूट जाता। क्या आर्य समाज ने रैगर समाज से लेकर दलित एवं अनेकों समाज के लिए ऐसे कार्य नहीं किये जो इतिहास में आज भी अंकित हैं?

लेकिन बापू को अपने धर्म और समाज की परवाह नहीं है। बापू को तो निज जीवन में स्वयं की ऊंचाई चाहिए इसलिए बापू हरि बोल-हरि बोल कर अली-मौला बोल भी बोलने लगते हैं। ये भी कहिये कि अब कथाओं के बीच बीच में भजन को द्विअर्थी बनाकर, संप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने के नाम पर, अली मौला और अल्लाह हू अकबर का चलन शूरू किया गया है जो अब कथा प्रेमी हिंदू समुदाय भी दो पक्षों में बंट कर रह गया। जो कथा का वाचन, श्रवण, उद्देश्य, शुद्ध मन के साथ पवित्र कामना जैसे विषयों को जानते हैं वे इस चलन का विरोध करने लगे हैं। जो अज्ञानी हैं जिसे संत और कथावाचक की परिभाषा भी नहीं पता, वह संप्रदायिक सौहार्द के नाम पर कुतर्क करने लगा है। कथा में माहौल बनाने के लिए महिलाओं के नृत्य को आवश्यक बताने लगा है। साथ में आनंद लेने के नाम पर समर्थन में उतर गया है।

लेकिन सत्य ये है कि आज के कथावाचक न संत हैं और न ही साधु, बस मृदुभाषी हैं, और मन से धन पिपासु हैं। जैसे फिल्मों में गाने के लिए लटके-झटके होते हैं, वाद्य यंत्रों का जखीरा होता है वैसे ही इनके कथा पंडालों में भी लटके-झटके को खुलेआम देखा जा सकता है। क्या कोई बता सकता है कि शुकदेव जी, वैशम्पायन जी, वशिष्ठ जी या सनत कुमारों द्वारा किसी कथा में भजन भी गाये थे? कोई नृत्य गान भी हुआ था? कोई संगीत मंडली भी होती थी? भगवान के धर्मोपदेश, उपदेश, उनके लीलाओं की गूढ़ समीक्षा, यहां तक कि उनके आदर्श चरित्र की चर्चा तो दूर की बात है ये तो शिष्यों में भक्ति के भाव को भी उत्पन्न नहीं कर पाते। महिलाएँ कैमरे के सामने खूब नृत्य करती हैं और कैमरा हटा बस सब भक्ति उतर गया। दुर्भाग्य से भारत में इस्लाम की कट्टरता बढ़ रही है, उनके द्वारा हिंदुओं की नृशंस हत्या की जा रही हैं, इनके अधिकारों का हनन किया जा रहा है, शासन द्वारा लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इन्हें चुप कर दिया जा रहा है, साम्प्रदायिक तनाव बताकर डरा दिया जाता है। ऐसे में भारत की सनातन व्यवस्था चले तो कैसे चले? आने वाले दिनों में कथा सुनने जाएं तो हो सकता है कि भजन के बदले गजल और कव्वाली के साथ ही साथ फिल्मी नगमें सुनाई दें तो आश्चर्य मत कीजिएगा। जहाँ विरोध किया, वहीं पर कुछ समर्थन करने वाले मरने-मारने पर आ जाएंगे क्योंकि धर्मनिरपेक्षता है ना। इसमें सनातन धर्म को ऐसे ही लोग चलाएंगे।

- विनय आर्य, महामन्त्री

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अभिनेता सुशान्त सिंह राजपूत की आत्महत्या एवं भारत में होने वाली आत्महत्याओं का मनोवैज्ञानिक चिन्तन

भारत में सेलेक्टिव आत्महत्याओं पर ही चर्चा क्यों?

..... यदि अभिनेता द्वारा आत्महत्या इतनी दुखद हो सकती है, एक संगठन के व्यक्ति की हत्या की चिंता इतनी महत्वपूर्ण हो सकती है, तो फिर देश के भावी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिकों की आत्महत्याओं का विषय देश और समाज दोनों के लिए सर्वाधिक चिन्तनीय क्यों नही होना चाहिए? पर छात्रों की आत्महत्याएं अक्सर एक ताजा समाचार या घटनाएं बनकर अगले ही दिन कोने में फेंक दी जाती हैं। हालांकि प्रधानमंत्री जी ने 27 मार्च 2017 को इसी विषय पर चिंता जताते हुए छात्रों को डिप्रैशन से बाहर आने के सुझाव भी दिए थे। परंतु मानसिक स्वास्थ्य के लिए किसी विकासशील देश का बजट बहुत छोटा होता है। .....

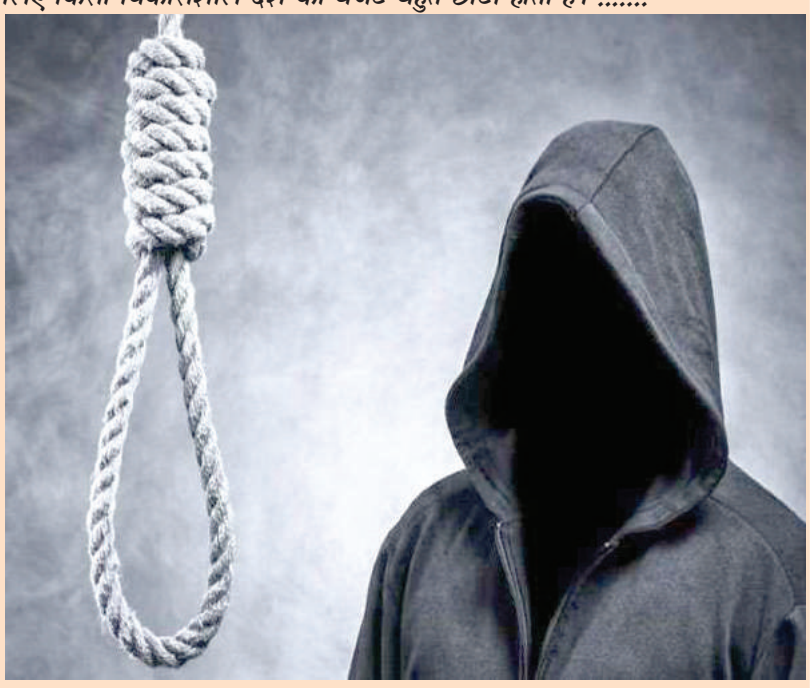

सुशांत सिंह की आत्महत्या को लगभग एक सप्ताह बीत गया। फिल्मी दुनिया और न्यूज चैनल के लिए यह आत्महत्या एक चुनौती और रहस्य बनी जा रही है। इससे कुछ समय पहले श्रीदेवी की मौत पर भी कई दिन न्यूज चैनलों पर लगातार खबर और बहस चलती रही। यही नहीं इससे कुछ समय पहले हैदराबाद युनिवर्सिटी के एक छात्र रोहित वेमुला को लेकर भारतीय राजनीति का बवाल किसी से छिपा नहीं है।

वैसे देखा जाये तो शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो जब देश के किसी न किसी इलाके से गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी, कर्ज जैसी तमाम आर्थिक तथा अन्यान्य सामाजिक दुशवारियों से परेशान लोगों के आत्महत्या करने की खबरें न आती हों। अखबार के किसी न किसी कोने में आत्महत्या की दो-चार खबरें तो हर रोज ही देखने को मिलती हैं।

फिल्म अभिनेता सुशांत द्वारा कथित आत्महत्या पर मेरे एक ट्वीट के संदर्भ में एक सज्जन का कहना था कि एक अभिनेता की मृत्यु पर शोक का जितना प्रचार हो रहा है उतना तो कमलेश तिवारी की हत्या के लिए भी नहीं हुआ था। उनके कथन से अनायास ही मन में प्रश्न उठा कि क्या लोगों को एक अभिनेता की आत्महत्या से इतना दु:ख पहुँचता है या आत्महत्याएं भी सलेक्टिव हो गई हैं कि किस आत्महत्या पर देश को शोक मनाना है किस पर नहीं? पिछले दिनों विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू. एच. ओ.) ने दुनियाभर में होने वाली आत्महत्याओं को लेकर एक रिपोर्ट जारी की थी जिसके मुताबिक दुनिया के तमाम देशों में हर साल लगभग आठ लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जिनमें से लगभग 21 फीसदी आत्महत्याएं भारत में होती हैं। यानी दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा।

आखिर कौन हैं हमारे देश में जो इतनी बड़ी संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं और हम तक खबर भी नहीं पहुँचती? आत्महत्या हमारे आसपास हो रही है और हमें पता भी नही चलता। यह सब जानने के लिए भी विश्व स्वास्थ्य संगठन का सहारा लेना पड़ता है। हमारी संवेदनशीलता गिर रही है या फिर हमें सिर्फ कुछ ही आत्महत्याओं पर शोक मनाना चाहिए? ऐसा नहीं है मुझे सुशांत सिंह की मौत का दु:ख नहीं है, बहुत दु:ख हुआ जानकर कि एक उभरता हुआ कलाकार फिल्मी उधोग धंधे के भाई-भतीजावाद का शिकार हो गया।

लेकिन मुझे दु:ख उन आत्महत्याओं का भी है जो हमारे नौनिहाल कर रहे हैं। वे बच्चे बड़ी संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं जिन बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार देश मे प्रतिदिन औसतन लगभग 32 छात्र आत्महत्या कर रहे हैं। पर यह आंकड़े कभी एकमत से देश और समाज की चिंता का विषय न होकर एक परिवार की व्यक्तिगत समस्या मान लिए जाते हैं।

यदि अभिनेता द्वारा आत्महत्या इतना दुखद हो सकती है, एक संगठन के व्यक्ति की हत्या की चिंता इतनी महत्पूर्ण हो सकती है, तो फिर देश के भावी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिकों की आत्महत्याओं का विषय देश और समाज दोनों के लिए सर्वाधिक चिन्तनीय क्यों नही होना चाहिए? पर छात्रों की आत्महत्याएं अक्सर एक ताजा समाचार या घटनाएं बनकर अगले ही दिन कोने में फेंक दी जाती हैं। हालांकि प्रधानमंत्री जी ने 27 मार्च 2017 को इसी विषय पर चिंता जताते हुए छात्रों को डिप्रैशन से बाहर आने के सुझाव भी दिए थे। परंतु मानसिक स्वास्थ्य के लिए किसी विकासशील देश का बजट बहुत छोटा होता है। ऐसे में इस समस्या के निदान के लिए अध्यापकों और अभिवावकों का दायित्व अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आत्महत्याओं के ये आंकड़े 15 वर्ष से 29 वर्ष की उम्र के बीच के हैं। किसी भी समस्या का सरलतम विकल्प आत्महत्या कैसे हो सकता है? कारण जितने सामान्य दिखते हैं उसके उलट वह उतने ही अधिक घातक हैं।

बचपन में अच्छे स्कूल की होड़ और पीठ में लदा बोझ बच्चों के मस्तिष्क का सर्वांगीण विकास नहीं होने दे रहा है। क्वालिटी टीचर फैकल्टी की कमी बच्चों के बेस को मजबूत न करके उनको किताबी कीड़ा बना रही है। क्योंकि अभिभावक बच्चों को प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनने को प्रोत्साहित करते हैं न कि शिक्षक बनने को। शिक्षक बनना किसी भी व्यक्ति की मजबूरी है प्राथमिकता नही। बेरोजगार या मनचाहे क्षेत्र में चयनित न होने पर व्यक्ति शिक्षक बन जाता है। ऐसे में शिक्षक का पद मात्र एक नौकरी रह गया है न की बच्चों और देश के भविष्य का सृजनकर्ता। एकेडमिक वर्षों में बच्चों का अधिकतर समय पुस्तकों से नकल करके राइटिंग वर्क करने में ही बीत जाता है। उस राइटिंग के लिए 20-20 कॉपियां भरवाई जाती हैं जो राइटिंग भविष्य में किसी काम नहीं आती। ऐसे में बच्चे की असीमित प्रतिभा और उनके बहुमूल्य वर्षों को नकलची बनाने में नष्ट कर दिया जाता है।

10वीं-12वीं के बच्चों को आगे की तैयारी के लिए कोचिंग सेंटर्स में जिस कोर्स का सामना करना पड़ता है वह उनके अब तक के स्तर से बहुत आगे होता है, परिणामस्वरूप 10वीं, 12वी में 80-90 प्रतिशत अंक प्राप्त किये बच्चे 6-7 घण्टों की कोचिंग के बाद भी लगभग 15 लाख इंजीनियर छात्र और 10 लाख मेडिकल छात्रों की भीड़ में शामिल नहीं हो पाते। तब "कुछ बन जाने के लिए" 2-4 वर्ष का गैप और कोचिंग सेंटर्स को लाखों रुपए के भुगतान के पश्चात भी "कुछ नही बन पाने" का सदमा सहन करना बहुत मुश्किल हो जाता है।

क्वालिटी फैकल्टी के संदर्भ में आचार्य चाणक्य का एक कथन सदा अनुपालित करने योग्य है - 'जब तक शिक्षक प्रत्येक शिष्य में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने में सफल नहीं हो जाता तब तक शिक्षक भी सफल नहीं कहा जा सकता।' अत: आत्महत्या के आंकड़ों को रोकने में शिक्षा व्यवस्था में सुधार के पहले शिक्षकों के निर्माण प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है क्योंकि छात्रों को राष्ट्र के लिए उनके जीवन का मूल्य समझाने वाले शिक्षक चाहिए न कि पड़ोसी या सम्बन्धी के बेटे की सैलरी को अपना टारगेट बनाने वाले युवाओं का निर्माण करने वाले शिक्षा कर्मचारी।

इसके अतिरिक्त दूसरा मुख्य दायित्व अभिभावकों का हो जाता है जो बच्चों को परीक्षा में अच्छे मार्क्स लाने के लिए उपहारों का लालच देकर नम्बर 1 होने की ऐसी मरीचिका में डाल देते हैं जिसको छात्र अपनी एक अलग ही दुनियां बनाकर स्वंय को उसका नायक मान लेते हैं। अब वही उनका सपना हो जाता है। अभिभावक उनके नम्बर 1 होने पर मनचाहे उपहार और समृद्ध भविष्य का ऑप्शन तो देते हैं परन्तु नम्बर 1 न आने के बाद के ऑप्शंस में सामाजिक अपमान की ऐसी झलक दिखा देते हैं जिसमें जीना उनको एक सजा दिखने लगता है।

जर्नल न्यूरोसाइकोफार्मेकोलॉजी के एक शोध से पता चलता है कि खुश रहने वाले परिवारों के बच्चे सामान्यत: आत्महत्या नहीं करते क्योंकि उनका डिप्रेशन घर वालो से बातें करके सुलझ जाता है। असफल होने की अवस्था में नए रास्ते उनके सामने खुल जाते हैं। इसके विपरीत जिन परिवारों में बच्चे अपने मन के भावों को प्रकट करने से हिचकते हैं वहां ऐसी घटनाएं घटने की आशकाएं बहुत अधिक बढ़ जाती हैं। दिन के 16-18 घण्टे रोबोटिक शेड्यूल में बिताने वाले 15 से 23 वर्ष तक के ये छात्र पढ़ाई, कोचिंग, फ्यूचर, अपोजिट सेक्स अट्रैक्शन, रिलेशनशिप आदि के भारी भरकम परिवर्तनों में सामंजस्य नही बना पाते हैं। मार्गदर्शन के अभाव में यह असंतुलन आत्महत्या का कारण बन जाता है।

अत: अभिभावकों द्वारा बच्चों को शोहरत, धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाने के चक्कर मे उन पर इच्छाएं नहीं थोपनी चाहिएं। दूसरे ऑप्शंस पर माता पिता को बच्चों से खुलकर चर्चा की बहुत आवश्यकता होती है। ताकि गला काट कम्प्टीशन की इस भीड़ में असफल होने पर कही आपका अपना बच्चा न खो जाए, इसलिए बच्चा हमारा है जिम्मेदारी भी हमारी ही बनती है कि सफलता के नाम पर हमें उसे खुश देखना है या उसकी मृत देह?

- राजीव चौधरी

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों और आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने गीरब व आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से निर्धन बस्तियों में और आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार-विमर्श कर के आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग

कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग,
शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

आर्यसमाज के माध्यम से वजीरपुर जे.जे. कालोनी दिल्ली में जरुरमन्द परिवारों को सहयोग ने बांटे वस्त्र

कोरोना महामारी के कारण देश में आर्थिक मंदी है जिसके कारण प्रत्येक व्यक्ति की आय पर प्रभाव पड़ा है परंतु इस मंदी की मार मजदूर वर्ग अत्याधिक झेल रहा है और उनके पास मूलभूत वस्तुओं की कमी हो रही है।

समाज के जरूरतमंद लोगों की जरूरतों को पूरा करने हेतु 'सहयोग' ने 5 जुलाई, 2020 को वजीरपुर जे जे कोलोनी क्षेत्र में आर्य समाज वजीरपुर के अधिकारियों के सौजन्य से वस्त्र वितरण का कार्यक्रम किया।

कोविड-19 के सन्दर्भ में सरकार द्वारा निर्दिष्ट नियमों - मास्क, सैनिटाइजेशन एवं सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए 5-5 लोगों को बुलाकर वस्त्र वितरण किया। भीड़ से बचने के लिए एक निश्चित संख्या में वितरण हुआ। सहयोग द्वारा वितरण के लिए ले जाए गए वस्त्रों को आर्यसमाज में ही रखवा दिया गया ताकि आर्यसमाज के अधिकारीगण कल फिर वितरण कर सकें।

'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएँगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता निम्नलिखित है-

आर्य समाज मंदिर, डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007

फेसबुक एवं गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन कार्यक्रम

गुरु विरजानंद गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

गुरु विरजानन्द जी की जन्मभूमि करतारपुर में 6 जुलाई को गुरु विरजानंद गुरुकुल महाविद्यालय में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन धूमधाम से किया गया। इसका फेसबुक और गूगल मीट एप पर सीधा प्रसारण भी किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रों से यज्ञ के साथ हुआ। इसमें यजमान के रूप में हरिमंगल त्रिपाठी और उनकी पत्नी, राजेश अमरप्रेमी अपनी पत्नी के साथ उपस्थित थे। इसके बाद जालंधर से आए श्री राजेश अमर प्रेमी के भजनों की प्रस्तुति हुई। इसमें ऋषि भक्ति के भजनों के साथ-साथ प्रभु भक्ति के भजन हुए। इसके बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारी नरेश कुमार ने एक सुंदर गीत की प्रस्तुति की, जिसको सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए। इसके बाद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विनय आर्य जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इसमें आर्य जी ने सभी को आर्य समाज से जुड़ने का आग्रह एवं संगठन को मजबूत करने पर विशेष बल दिया। गुरुकुल के प्रधान ध्रुव मित्तल ने विनय आर्य जी का स्वागत भाषण करते हुए कहा कि विनय जी के नेतृत्व में आर्य समाज ने बहुत उन्नति की है। कार्यक्रम के मुख्यअतिथि स्वामी सुमेधानंद जी (सांसद सीकर राजस्थान) रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि गुरु विरजानन्द के पदि्चन्हों पर चलते हुए आर्य समाज को आगे बढ़ाना चाहिए। स्वामी जी ने गुरूकुल के छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि हर विद्यार्थी को गुरुओं के प्रति सदा कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि कृतघ्न होना बहुत बड़ा पाप है। स्वामी जी ने आचार्य उदयन की बड़ाई करते हुए कहा कि उनके आने से गुरूकुल करतारपुर ने बहुत बड़ी उन्नति की है। कार्यक्रम में मंच संचालन आचार्य उदयन आर्य जी ने करते हुए कहा कि गुरूकुल करतारपुर एकमात्र ऐसा गुरूकुल है जहां कोरोना काल में भी ऑनलाइन माध्यम से निरन्तर पढ़ाई हो रही है। उन्होंने दोनों वक्ताओं का अभिनन्दन करते हुए कहा कि ऐसे नेताओं के नेतृत्व से ही आर्य समाज आगे बढ़ सकता है। अन्त में

गुरूकुल के महामंत्री नरेश कुमार धीमान जी ने सबका हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में गुरुकुल के सभी छात्र और अध्यापकों के साथ गुरूकुल अधिष्ठाता सुखदेव राज भी उपस्थित थे।

- ***आचार्य***

वार्तालाप

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....वार्तालाप करना एक कला है। परस्पर वार्तालाप से व्यक्तियों के सम्बन्ध बनते और बिगड़ते भी हैं। कोयल और कव्वा दोनों काले हैं।कोयल की मीठी वाणी सबके हृदय में अमृत उड़ेल देती है और कव्वे की कांव-कांव सुन सब उसे पत्थर मारते हैं।.....

.....मुझे क्या बोलना है और किस विधि से अपनी बात कहनी है इसका विचार कर लेना चाहिये। संक्षिप्त और प्रभावशाली विधि से कही बात का अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्मरण रहे धनुष से छूटा बाण और मुख से निकला शब्द वापिस लौट कर नहीं आता। .....

वार्तालाप करना एक कला है। परस्पर वार्तालाप से व्यक्तियों के सम्बन्ध बनते और बिगड़ते भी हैं। कोयल और कव्वा दोनों काले हैं। कोयल की मीठी वाणी सबके हृदय में अमृत उड़ेल देती है और कव्वे की कांव-कांव सुन सब उसे पत्थर मारते हैं।

कोयल काको देत है कागा काको लेत।
तुलसी मीठेवचन सों जग अपनो कर लेत।।

वार्तालाप में निम्न सूत्र अनुकरणीय हैं-

ध्यान पूर्वक सुनें

किसी से वार्तालाप करते समय शान्ति के साथ दूसरे व्यक्ति की बात सुनें। उसे बीच में टोकें नहीं और न ही अपनी बात चलायें। अगला व्यक्ति क्या कहना चाहता है इसे समझ लेने से आप उसका उत्तर गम्भीरता से दे सकते हैं।

दूसरे की बातों में रूचि

वार्तालाप में दूसरे की बातों में रूचि दिखायें। उसे अपनी बात कहने के लिये प्रोत्सहित करें।

दूसरे के अभिप्राय को समझें

दूसरे के अभिप्राय को बिना समझे कुछ भी बोलना, अनर्गल, असम्बद्ध बोलना अनुचित है। इससे दूसरा व्यक्ति अपने को अपमानित समझ कर आपसे बात करना बन्द कर देगा।

अच्छे श्रोता बनें

बोलने वाले की ओर देखते रहिये। जिससे उसे ऐसा लगे कि आप उसका एक-एक शब्द ध्यान से सुन रहे हैं। जब तक वह अपनी बात पूरी न कह दे तब तक किसी दूसरे प्रसंग की बात न चलायें।

गम्भीरता से चिन्तन

किसी की समस्या को सुनकर उस पर गम्भीरता से चिन्तन और समझने का प्रयत्न करें। फिर यथाशक्ति उसका समाधान दें। एकदम सीधा उपदेश न झाड़ें।

आत्मीयता दर्शाएं

पहले अपनी बात को कहना प्रारम्भ न करके सामने वाले को अपनी बात कहने के लिये प्रोत्साहित कीजिये और उसी विषय में प्रश्न पूछिये। आपका परिवार पत्नी बच्चे कैसे हैं, आपका स्वास्थ्य कैसा है? इत्यादि वाक्यों से प्रारम्भ करें और उचित अवसर आने पर अपना आने का उद्देश्य बतलायें।

व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित

सामूहिक वार्तालाप में प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करें। इससे सभी लोग ऐसा अनुभव करेंगे कि अमुक व्यक्ति मुझे ही महत्वपूर्ण समझकर अपनी बात कह रहा है। किसी एक व्यक्ति को लक्ष्य करके बात किये जाने पर दूसरे लोग ऊंघने, बोलने या अन्य चेष्टा करने लगते हैं।

सहमति प्रकट करना

वार्तालाप करते समय मन में यह विचार कर लें कि मुझे किसी विवाद में नहीं पड़ना। जब तक बहुत आवश्यक न तो तब तक अपनी असहमति प्रकट न करें। किसी बात पर मतभेद है तो उस समय आक्रामकता छोड़ सहज भाव से अपनी बात कहें। जिस व्यक्ति का झगड़ा करने ही का विचार है उस से वाद-विवाद न करना ही उचित है। आप सहमत है यह दिखाने के लिये दूसरे की आँखों में आँखे अर्थात् उस ओर दृष्टि लगी रहनी चाहिये।

सकारात्मक पक्ष को सहमति दें

जिससे आप वार्तालाप कर रहे हैं पहले उससे ऐसे प्रश्न पूछें कि जिनका उत्तर वह हाँ में दे सके। जहाँ किसी बात में ना कहने की सम्भावना हो वहाँ उसे विकल्प के रूप में दोनों पक्ष रखते हुये सकारात्मक पक्ष में सहमति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये।

'पहले तोलो फिर मुख से बोलो'

मुझे क्या बोलना है और किस विधि से अपनी बात कहनी है इसका विचार कर लेना चाहिये। संक्षिप्त और प्रभावशाली विधि से कही बात का अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्मरण रहे धनुष से छूटा बाण और मुख से निकला शब्द वापिस लौट कर नहीं आता। अपना पक्ष सही होने पर भी जब लोग सहमत न हो अथवा विरोध करें उस समय होने वाली हताशा को कैसे दूर करें?

क्रमशः

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

.....When Munshi Ram arrived at the place of the lecture, he felt very surprised for in the audience he saw some Englishmen. But he was all the more surprised when he listened to the lecture. He wondered how a man who knew only Sanskrit could be so interesting and convincing. .....

.....Swami Dayanand heard him patientlyand kept quiet. But next day in the course of his lecture the Swami said, "I will always speak the truth, come what may. I do not care for the Collector nor am 1 afraid of the Commissioner. Even the Governor cannot hold me back from telling the truth. I stand for truth and I will die for it." ....

The other was the conduct of the Gosains. These persons seemed to be good, but really they were very wicked. One day Munshi Ram chanced to see their wickedness with his own eyes. Both these things made him lose his faith in the Brahmin priests ofIndia.

After some days' stay at Mathura, Munshi Ram reached Taiwan. There his marriage was celebrated. He spent about a month there, sometime in his own house and sometime in the house of his father-in-law. Then he thought of going back to Benares. But before he did so he went to Bareilly where his father was the Kotwal of the city. At Bareilly things were no better than at Benares. Here, also, the rich people lived a life ofluxury. They drove about in fine carriages, they drank heavily and were fond of music. Some of them even married dancing girls. Munshi Ram saw something of this society, and in the end came to despise this kind oflife.

Eventually he gave up his idea of going to Benares. He went to Allahabad instead and joined the Muir Central College. There he devoted himself to his studies. He took a great interest in Chemistry and Psychology. After sometime, he took his examination, but did not sueceed. This was because he fell ill on the day when he had to sit for the paper on Logic.

After this he did not like to stay in Allahabad. He thought of joining the Muslim College at Aligarh. But as soon as he reached that place, cholera broke out. The college was, therefore, closed, and he had to go back to Bareilly once again.

While he was at Bareilly, Swami Dayanand arrived there. Munshi Ram's father attended some of his lectures and asked his son to do the same. But he did not like to do so. "There cannot be much in the lectures of a gentleman who knows only Sanskrit," he said to himself. But his father pressed him again and again to go to the Swami 's leetures. At last he agreed.

When he arrived at the place of the lecture, he felt very surprised for in the audience he saw some Englishmen. But he was all the more surprised when he listened to the lecture. He wondered how a man who knew only Sanskrit could be so interesting and convincing. After this it became a habit with him to see as much of Swami Dayanand as possible. He did not go to the lectures only, but also went to the Swami's private meetings. From these he learnt a lot about the Swami.

But the Swami did more than reveal his knowledge in his lectures. He was a reformer and found fault with everything that he found bad amongst the Hindus. One day he criticized the Christians also. At this the Commissioner sent for the Swami's host and said to him, "Please tell the Swami riot to say hard things about other people. By doing so he injures their feelings." The host agreed to do so. But when he went up to the Swami, his heart sank within him. He asked other people to do this difficult task. But none dared do it. After much hesitation he at last gave the message to the Swami himself.

Swami Dayanand heard him patientlyand kept quiet. But next day in the course of his lecture the Swami said, "1 will always speak the truth, come what may. 1 do not care for the Collector nor am 1 afraid of the Commissioner. Even the Governor cannot hold me back from telling the truth. I stand for truth and I will die for it."

All these things impressed Munshi Ram very much. But still he said to himself, "The Swami would be a very great man if only he did not believe in God and the Vedas." One day he even made up his mind to have a talk with the Swami on the existence of God. The Swami gave such convincing replies to his questions that he could not say much. Then he said to him, " It is true you have more logic than I. But though your logic makes me dumb, my mind remains unchanged I cannot believe in God in spite of what you say."

At this the Swami said, "Nobody can convince you of the existence of

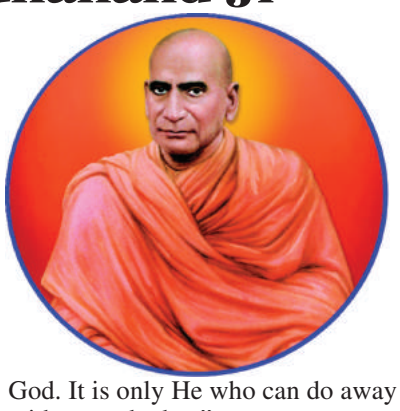

God. It is only He who can do away with your doubts."

The Swami left Bareilly after some days, but Munshi Ram never forgot him. He remembered his faith in God, his logic, his humour and his fearlessness. But still he did not believe in God.

Another person who influenced him at this time was his wife. She was an extremely good woman and was staying with him at Bareilly. It was the rule of her life never to take her meals before her husband had his. One day Munshi Ram did not arrive till late in the night. But she waited patiently for him. At last he came home slightly the worse for drink. Instead of reproaching him she looked after him with great care. When he recovered he asked her, " Have you had your meals?" She replied, "How can I, when you have not had yours." This act of devotion on her part impressed him very much. From that day he began to look upon her as his best friend. He made up his mind not to keep back anything from her in future.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

वैदिक प्रश्नोत्तरी परीक्षा 2019-20

राजस्थान के जोधपुर स्थित महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास की ओर से वैदिक प्रश्नोत्तरी 2019-20 की परीक्षा में 15000 बच्चों ने भाग लिया था। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा कुछ बच्चों को सांत्वना पुरस्कार भी मिला। साथ ही प्रतियोगिता में शामिल होने वाले सभी बच्चों को प्रमाणपत्र भी दिए गए।

महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास के प्रधान विजय सिंह भाटी, मंत्री किशन लाल आर्य, कोषाध्यक्ष जय सिंह जी गहलोत, वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के संयोजक मदनलाल तंवर, सहयोगी सेवाराम आर्य, कैलाश चंद्र आर्य, रामस्वरूप जी टाक, नरपत भाभा ने इस प्रतियोगिता में सहयोग दिया। यह प्रतियोगिता फरवरी महीने कराई गई थी। जोधपुर जिले में यह प्रतियोगिता 2017 से चल रही है। इसमें मदनलाल तंवर जी का सहयोग नित्य मिल रहा है। इन्हीं के प्रयास से और ओम प्रकाश जी कोटा वालों के आशीर्वाद से यह प्रतियोगिता चल रही है।

- मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण **'सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका'** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

प्रेरक प्रसंग

कभी ऐसे भी वकील होते थे

स्वर्गीय पण्डित श्री घासीराजमी एम. ए. ने बड़ी आयु में वकालत करनी आरम्भ कर दी, परन्तु उनकी प्रवृत्ति इस धन्धे के लोगों से भिन्न थी। पण्डित श्री गंगाप्रसादजी न्यायधीश ने लिखा है कि वे जज होते तो अधिक यश पाते। उन्हें धन कमाने की लालसा न थी। उनका यत्न प्राय: यह होता था कि वादी प्रतिवादी का समझौता हो जाए। अनेक बार न्यायालय की ओर से झगड़ों को निपटाने के लिए वे मध्यस्थ बनाये गये।

महात्मा हंसराजजी ने पण्डित श्री लखपतरायजी हिसार के विषय में भी ऐसा ही लिखा है कि पण्डितजी के पास जब ग्रामों के कृषक जाटों के झगड़े आते तो पण्डितजी प्राय: उनका केस लड़ने के बजाय उनका विवाद निपटाके उनका समझौता करवा देते। घर में आते हुए धन को वह ठुकरा देते थे। कभी ऐसे-ऐसे वकील होते थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

नित निरंतर कुछ-न-कुछ नया और उपयोगी ज्ञान धारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

स्वाध्याय की महिमा

शरीर की उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशलता और महानता आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे है और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं।

इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान किया जाता है-

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पायें चढ़ें, नित ऊपर को,
अविरुद्ध रहे, ऋजुपंथ गहें,
परिवार कहे, वसुधा भर को,
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें निज जीवन को,
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमंडल को।।

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

शोक समाचार

श्री प्रताप नारायण मिश्र को भ्रातृशोक

आर्यसमाज चौक प्रयागराज (इलाहाबाद) के मन्त्री श्री प्रताप नारायण मिश्र जी के बड़े भाई आचार्य श्री कमल नारायण मिश्र जी का हृदयगति बाधित होने के कारण दिनांक 4 जुलाई, 2020 को प्रात: 5:40 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री राजेन्द्र लाम्बा जी को पत्नी शोक

आर्यसमाज पश्चिम विहार, नई दिल्ली के संरक्षक एवं पूर्व अधिकारी श्री राजेन्द्र लाम्बा जी धर्मपत्नी श्रीमती सुदर्शन लाम्बा जी की दिनांक 7 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 जुलाई, 2020 को आर्यसमाज पश्चिम विहार में सम्पन्न हुई।

श्री यमुना साहू का निधन

आर्य समाज ढाका (बंगलादेश) के वरिष्ठ सदस्य व सामाजिक कार्यकर्ता श्री यमुना साह जी का ६६ वर्ष की आयु में दिनांक 7 जुलाई, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार रामचन्द्र ढाका स्थित दक्षिणी पोखर पर प्रात: 11 बजे सम्पन्न किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 जुलाई, 2020 से रविवार 12 जुलाई, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 09-10 जुलाई, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 08 जुलाई, 2020

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश तथा धर्म के जिन दीवानों के खून में तरंगे उठीं, उनमें से ठाकुर मलखान सिंह जी भी एक थे। यह बालक भी अब हैदराबाद की जेल को अपना निवास बनाने के लिए तथा वहां जाकर धर्म रक्षा की उमंग लेकर डोलने लगा। एक तथ्य यह भी है कि संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) का जिला सहारनपुर एक ऐसा जिला रहा है कि जिसने हैदराबाद के इस सत्याग्रह आन्दोलन के लिए देश में सर्वाधिक सत्याग्रहियों के रूप में अपना योगदान देने का गौरव प्राप्त किया। इस जिले को यह गौरव दिलाने का कार्य करने वाले ठाकुर मलखान सिंह जी ही थे, जिनके अथक परिश्रम ने यह कार्य कर दिखाया। जो प्रथम जत्था सहारनपुर से हैदराबाद के लिए रवाना हुआ, उस जत्थे का मलखान सिंह जी भी एक अंग थे।

सत्याग्रह के समय मलखान सिंह जी की आयु मात्र 29-30 वर्ष की थी। इतना ही नहीं इस समय आपकी पत्नी भी मायके गई हुई थीं। आप पत्नी को बिना देखे और बिना बताये ही ठीक उसी प्रकार सत्याग्रह के लिए रवाना हुए जिस प्रकार महात्मा बुद्ध सत्य की खोज के लिए अपनी पत्नी को बताये बिना ही घर त्याग कर निकले थे तथा उनके जाने के पश्चात बुद्ध कि पत्नी उन्हें यही उलाहने ही देती रह गई थी कि हम क्षत्रानियां तो अपने पतियों को हंस-हंस कर युद्ध के मैदान में भेज दिया कराती हैं, फिर आप तो सिद्धियां प्राप्त करने के लिए जा रहे थे, यदि आप मुझे कहकर जाते तो मैं आपको खुशी खुशी भेज देती। मलखान जी ने श्री वेदव्रत वानप्रस्थी जी के साथ हैदराबाद के पुसद केंद्र से सत्याग्रह किया तथा यहाँ की पुलिस ने आपको पकड़ कर जेल भेज दिया। इस प्रकार आप हैदराबाद की मुस्लिम निजाम की जेलों में रहे।

पकडे जाने के पश्चात सिक्खों के अंतिम अर्थात दशम गुरु गुरु गोविन्द सिंह जी की निर्वाण स्थली नांदेड के न्यायालय में आप पर मुकदमे का नाटक किया गया। इस नाटक के परिणाम स्वरूप आपको एक वर्ष के लिए सश्रम जेल का दंड घोषित किया गया। इस दंड की घोषणा के साथ ही आप को चंचलगुडा जेल में भेज दिया गया। मलखान जी अत्यंत कठोर शरीर के स्वामी थे किन्तु जेल में मिलने वाली यातनाओं तथा गंदे तथा कंकडों मिले खाने ने कुछ ही दिनों में उनके शरीर को जरजर करते हए खोखला बना दिया। परिणाम स्वरूप दिनांक 1 जुलाई सन 1939 ईस्वी को मलखान जी अपने शरीर को छोड़ कर अनंत यात्रा के लिए रवाना हो गए। हैदराबाद के निजाम ने अपनी क्रूरता तथा बर्बरतापूर्ण कार्यों को छुपाने के लिए जेल अधिकारियों को इस मृत्यु के सामाचार को गुप्त रखने का आदेश दिया। जेल के अधिकारियों ने आदेश मानते हुए चुपचाप उनका दाह संस्कार जेल में ही बिना किसी को इसकी सूचना दिए कर दिया।

हम सब जानते हैं कि आग को चाहे जितना भी छुपाने का प्रयास करे, यह छुपाने से कभी छुपा नहीं करती। ठीक ऐसा ही हैदराबाद निजाम की इस जेल में भी हुआ। हैदराबाद की रुढ़िवादी मुस्लिम सरकार ने जितना अधिक अपनी क्रूरताओं पर पर्दा डालने का प्रयास किया, उतना ही अधिक उसकी क्रूरता का साक्षात्कार देश भर में कही अधिक हैदराबाद के महान वीर भाई शामलाल जी सरीखे आर्य वीरों के बलिदानों को छुपाने का प्रयास भी किया गया, किन्तु निजाम इसमें भी विफल रहा। इसे छिपाया नहीं जा सका अपितु इन बलिदानियों के समाचारों से जन-जन में एक नए रक्त का संचार किया तथा नई उमंगों के साथ बलिदानियों की पंक्ति में नित्य नए नाम जुड़ने से यह पंक्ति प्रतिदिन लम्बी ही होती चली गई, ठीक इसी प्रकार लम्बी हो रही थी जिस प्रकार खींचने से रबड़ लंबा हो जाता है। इस

प्रतिष्ठा में,

प्रकार ही ठाकुर मलखान जी के बलिदान का समाचार भी अधिक समय तक छुपा नहीं रह सका। अंत में मलखान जी के बलिदान तथा अन्य हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानियों का बलिदान हैदराबाद के निजाम के कफन की कील सिद्ध हुआ, निजाम को झुकाकर आर्यों की सब शर्तों को मानते हुए सब सत्याग्रहियों को छोड़ने के लिए बाध्य होना पडा।

- डा.अशोक आर्य

खेद व्यक्त

खेद है कि कोरोना वायरस से उत्पन्न संक्रमण की वैश्विक महामारी के कारण सम्पूर्ण भारत में लागू लॉक डाउन एवं डाक व्यवस्था सुचारु रूप से व्यवस्थित न होने के कारण अप्रैल 2020 से आर्यसन्देश साप्ताहिक के अंक न तो छापे जा रहे हैं और न ही भेजे जा रहे हैं। इस स्थिति में आर्यसन्देश साप्ताहिक के ये अंक ई-पत्र के रूप में प्रकाशित किया जा रहे हैं तथा ऑनलाइन ही ईमेल, व्हाट्सएप्प, फेसबुक एवं टेलिग्राम के माध्यम से प्रेषित किए जा रहे हैं।

यदि आप आर्यसन्देश को ऑन लाइन पढ़ना चाहते हैं या अपने किसी परिचत तक पहुंचाना चाहते हैं तो नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें। आपको प्रति सप्ताह नियमित प्राप्त होता रहेगा -

https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह